

Telangana SSC First Language Composite Course Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hour 15 Minutes | Maximum Marks :80 | Total Questions :15

General Instructions

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए :

1. कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं ।
2. प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए प्रश्न-पत्र कोड को परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
3. कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 12 प्रश्न हैं ।
4. कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, उत्तर-पुस्तिका में साफ़ स्थान पर प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
5. इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक परीक्षार्थी केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

अनुभाग - I: पठन बोध (Reading Comprehension)

प्रश्न 1 से 5: पठित गद्यांश (आधार : 'बड़े भाई साहब')

"अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा... मेरी स्वच्छंदता बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा।"

1. बड़े भाई साहब के व्यवहार में अचानक क्या और क्यों परिवर्तन आया ?

Solution:

Concept: इस प्रश्न में कहानी "बड़े भाई साहब" के पात्र-विश्लेषण को समझना आवश्यक है। कहानी में बड़े भाई साहब अनुशासन, परिश्रम और पढ़ाई के महत्व पर जोर देते हैं। लेकिन लगातार असफल होने के बाद उनके मन में आत्मविश्वास की कमी और आत्मग्लानि उत्पन्न हो जाती है। इसी मनोवैज्ञानिक परिवर्तन के कारण उनके व्यवहार में भी परिवर्तन दिखाई देता है।

Step 1: लगातार असफलता का प्रभाव

लगातार दो बार फेल होने के कारण बड़े भाई साहब का आत्मविश्वास पूरी तरह डगमगा गया था। परीक्षा में असफलता ने उन्हें मानसिक रूप से कमजोर कर दिया।

Step 2: नैतिक अधिकार का अभाव

जो व्यक्ति पहले छोटे भाई को घंटों उपदेश देता था और अनुशासन का पाठ पढ़ाता था, वही अब स्वयं

Solution:

Concept: इस प्रश्न में 'सहिष्णुता' शब्द के अर्थ तथा उसके प्रसंगानुसार प्रयोग को समझना आवश्यक है। सहिष्णुता किसी व्यक्ति की वह विशेषता है जिसमें वह दूसरों की गलतियों, उद्दंडता या कष्टदायक परिस्थितियों को धैर्यपूर्वक सहन करता है और तुरंत क्रोध या प्रतिक्रिया नहीं करता।

Step 1: शब्द का अर्थ

'सहिष्णुता' शब्द संस्कृत के दो शब्दों — 'सह' (साथ) और 'इष्णु' (सहन करने वाला) — से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है सहनशीलता, धैर्य या किसी कष्ट अथवा उद्दंडता को शांतिपूर्वक सहन करने की क्षमता।

Step 2: गद्यांश में प्रयोग

गद्यांश के संदर्भ में यह शब्द बड़े भाई साहब के स्वभाव को दर्शाता है। छोटा भाई उनके सामने ही पढ़ाई छोड़कर खेलता रहता था और उनके उपदेशों की अधिक परवाह नहीं करता था।

Step 3: सहिष्णुता का प्रभाव

फिर भी बड़े भाई साहब क्रोध करने या डाँटने के बजाय धैर्य से काम लेते रहे और सब कुछ देखते हुए भी कई बार अनदेखा कर देते थे। यही उनका सहनशील और धैर्यपूर्ण स्वभाव उनकी 'सहिष्णुता' को दर्शाता है।

Step 4: लेखक की भूल

लेखक ने बड़े भाई साहब की इस सहिष्णुता को उनकी कमजोरी समझ लिया और इसका अनुचित लाभ उठाया। यही उसकी सबसे बड़ी भूल थी।

Quick Tip

'सहिष्णुता' का अर्थ केवल सहन करना नहीं, बल्कि धैर्य और समझदारी के साथ परिस्थितियों का सामना करना भी है। यह एक महत्वपूर्ण मानवीय गुण है।

4. लेखक ने भाई साहब की नरमी का किस प्रकार अनुचित लाभ उठाया ?

Solution:

Concept: इस प्रश्न में कहानी "2222 222 2222" के माध्यम से यह समझना आवश्यक है कि जब किसी व्यक्ति की सहनशीलता या नरमी को सही रूप में न समझा जाए, तो उसका दुरुपयोग भी किया जा सकता है। लेखक ने बड़े भाई की सहिष्णुता को अनुशासन की कमी समझ लिया और इसका गलत लाभ उठाया।

Step 1: नरमी को स्वतंत्रता समझना

लेखक ने भाई साहब की नरमी और सहिष्णुता को अपनी असीमित स्वतंत्रता का प्रमाण मान लिया। पहले वह भाई साहब के डर और अनुशासन के कारण पढ़ाई पर कुछ ध्यान देता था।

Step 2: अनुशासन की अनदेखी

जब भाई साहब ने डाँटना और रोकना कम कर दिया, तो लेखक ने उनके सम्मान और अधिकार की अनदेखी करना शुरू कर दिया। वह उनके सामने ही बेखौफ होकर खेलने के लिए निकल जाता था।

Step 3: समय का दुरुपयोग

लेखक अपना अधिकतर समय पतंगबाजी, खेल-कूद और मेलों-तमाशों में बिताने लगा। उसने पढ़ाई की ओर लगभग ध्यान देना ही छोड़ दिया।

Step 4: अनुचित लाभ का परिणाम

भाई साहब की चुप्पी को लेखक ने अपनी मनमानी का लाइसेंस समझ लिया। इस प्रकार उसने न केवल अपनी पढ़ाई को नुकसान पहुँचाया बल्कि उस बड़े भाई के प्रति भी अपने कर्तव्य को भूल गया, जिसने उसे सुधारने के लिए अपना पूरा समय और प्रयास लगाया था।

Quick Tip

किसी की सहनशीलता या नरमी को उसकी कमजोरी समझना उचित नहीं है। अनुशासन और मार्गदर्शन का सम्मान करना ही सही मार्ग पर आगे बढ़ने में सहायक होता है।

5. इस गद्यांश के माध्यम से प्रेमचंद जी बाल-मनोविज्ञान का कौन सा पहलू उजागर करते हैं ?

Solution:

Concept: इस प्रश्न में लेखक [?] [?] [?] [?] [?] [?] द्वारा प्रस्तुत बाल-मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है। बाल-मनोविज्ञान यह बताता है कि बच्चों का व्यवहार अक्सर बाहरी नियंत्रण, भय, अनुशासन और प्रेरणा से प्रभावित होता है। यदि अनुशासन समाप्त हो जाए या उसका संतुलन न रहे, तो बच्चों का स्वभाव स्वच्छंदता की ओर झुक सकता है।

Step 1: भय और अनुशासन का संबंध

प्रेमचंद जी इस गद्यांश के माध्यम से यह दिखाते हैं कि बच्चे का मन अक्सर बाहरी अनुशासन और नियंत्रण पर निर्भर करता है। जब तक डर और नियंत्रण बना रहता है, तब तक बच्चा मर्यादा और नियमों का पालन करता है।

Step 2: भय समाप्त होने का प्रभाव

जैसे ही भय और नियंत्रण समाप्त हो जाते हैं, बच्चे के व्यवहार में ढीलापन आ सकता है और वह अनुशासन से दूर हो सकता है। यही कारण है कि लेखक के जीवन में भी अनुशासन के कम होते ही स्वच्छंदता बढ़ गई।

Step 3: आंतरिक प्रेरणा का महत्व

प्रेमचंद यह भी संकेत देते हैं कि बच्चा केवल बाहरी आदेशों से ही सही मार्ग पर नहीं चलता। उसे सही दिशा देने के लिए आंतरिक प्रेरणा, समझ और मार्गदर्शन भी आवश्यक होता है।

Step 4: संतुलित मार्गदर्शन की आवश्यकता

अत्यधिक कड़ाई और अत्यधिक नरमी — दोनों ही बच्चे के विकास के लिए हानिकारक हो सकती हैं। इसलिए बच्चों के सही विकास के लिए प्रेमपूर्ण, संतुलित और तर्कसंगत मार्गदर्शन आवश्यक होता है।

Quick Tip

प्रेमचंद जी की रचनाओं में बाल-मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। वे यह दर्शाते हैं कि बच्चों के विकास के लिए अनुशासन, समझ और प्रेम का संतुलित मेल आवश्यक होता है।

प्रश्न 6 से 10: अपठित गद्यांश (अरुणाचल का 'हा' गाँव)

"भारत का सबसे छोटा गाँव 'हा' अरुणाचल प्रदेश के कुरुंग कुमेय जिले में स्थित है। यहाँ के लोग सीमित संसाधनों और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी एक-दूसरे के सहयोग से जीवन को सुखमय बनाते हैं। यहाँ कृषि और पशुपालन मुख्य व्यवसाय है। आधुनिकता से दूर होने के बावजूद यहाँ की लोक-संस्कृति अत्यंत समृद्ध और जीवंत है।"

6. इस गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

Solution:

Concept: किसी भी गद्यांश का शीर्षक उसके मुख्य विचार या केंद्रीय भाव को संक्षेप में प्रकट करता है। शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो पूरे गद्यांश की विषय-वस्तु को स्पष्ट और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करे।

Step 1: गद्यांश का मुख्य विषय समझना

इस गद्यांश में 'हा' नामक गाँव की विशेषताओं का वर्णन किया गया है। इसमें गाँव की भौगोलिक स्थिति, सामाजिक सहयोग की भावना, पारंपरिक जीवन-शैली और समृद्ध लोक-संस्कृति का चित्रण किया गया है।

Step 2: केंद्रीय भाव की पहचान

गद्यांश का मूल भाव यह है कि यह गाँव आकार में छोटा होते हुए भी अपनी संस्कृति, सादगी और आपसी सहयोग के कारण विशेष महत्व रखता है।

Step 3: उपयुक्त शीर्षक का चयन

इस आधार पर गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक ऐसे होने चाहिए जो गाँव की विशेषता और उसकी सांस्कृतिक पहचान को स्पष्ट करें।

अतः इसके लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकते हैं — "भारत का सबसे छोटा गाँव : हा" या "हा गाँव : सादगी, सहयोग और संस्कृति का संगम"।

Quick Tip

शीर्षक चुनते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह गद्यांश के मुख्य विचार को संक्षिप्त, स्पष्ट और आकर्षक रूप में व्यक्त करे।

7. 'हा' गाँव की भौगोलिक और सामाजिक विशेषता क्या है ?

Solution:

Concept: इस प्रश्न में 'हा' गाँव की भौगोलिक स्थिति तथा सामाजिक जीवन की विशेषताओं को समझना आवश्यक है। किसी भी स्थान की भौगोलिक परिस्थितियाँ वहाँ के लोगों के जीवन-यापन, संस्कृति और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती हैं।

Step 1: भौगोलिक विशेषता

'हा' गाँव अरुणाचल प्रदेश के सुदूर और दुर्गम कुरुंग कुमेय जिले में स्थित है। यह क्षेत्र पहाड़ी, ऊबड़-खाबड़ और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों वाला है। यहाँ सड़क, बिजली तथा अन्य आधुनिक सुविधाओं का अभाव है। साथ ही यह भारत का सबसे छोटा गाँव होने के कारण जनसंख्या की दृष्टि से भी अत्यंत सीमित है।

Step 2: सामाजिक विशेषता

सामाजिक दृष्टि से यह गाँव एकता और भाईचारे का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ के लोग आधुनिक जीवन-शैली से दूर रहते हुए भी अपनी पारंपरिक लोक-संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं को सहेजकर रखते हैं।

Step 3: सामुदायिक जीवन

इस गाँव का समाज आपसी सहयोग, विश्वास और सामूहिक भावना पर आधारित है। यहाँ के लोग एक परिवार की तरह मिल-जुलकर जीवन व्यतीत करते हैं, जिससे सामाजिक समरसता बनी रहती है।

Quick Tip

किसी भी स्थान की भौगोलिक परिस्थितियाँ वहाँ के सामाजिक जीवन और संस्कृति को गहराई से प्रभावित करती हैं। कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में अक्सर लोगों के बीच सहयोग और सामूहिकता की भावना अधिक मजबूत होती है।

8. 'सीमित संसाधनों' के बावजूद गाँव के लोग सुखी कैसे हैं ?

Solution:

Concept: इस प्रश्न में यह समझना आवश्यक है कि वास्तविक सुख केवल भौतिक सुविधाओं से नहीं मिलता, बल्कि मानवीय मूल्यों, संतोष और आपसी सहयोग से प्राप्त होता है। जब समाज में सहयोग, विश्वास और संतोष की भावना होती है, तब सीमित संसाधनों में भी लोग सुखी जीवन जी सकते हैं।

Step 1: भौतिक संसाधनों का अभाव

'हा' गाँव में अस्पताल, पक्की सड़कें, बिजली और अन्य आधुनिक सुविधाओं का अभाव है। भौतिक दृष्टि से यहाँ के संसाधन सीमित हैं।

Step 2: मानवीय मूल्यों की प्रधानता

इसके बावजूद यहाँ के लोग इसलिए सुखी हैं क्योंकि उनके बीच ईर्ष्या, द्वेष और अनावश्यक प्रतिस्पर्धा की भावना नहीं है। वे संतोष और सरलता से जीवन जीते हैं।

Step 3: पारस्परिक सहयोग

गाँव के लोग एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं और सामूहिक रूप से कार्य करते हैं। चाहे खेती का कार्य हो, पशुपालन हो या घर बनाना — सभी लोग मिल-जुलकर काम करते हैं।

Step 4: सुख का वास्तविक आधार

आपसी सहयोग, आत्मनिर्भरता और संतोष की भावना उनके जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है। यही कारण है कि सीमित साधनों के बावजूद वे अपने जीवन में प्रसन्नता और संतुष्टि का अनुभव करते हैं।

Quick Tip

सच्चा सुख केवल भौतिक साधनों से नहीं मिलता, बल्कि संतोष, सहयोग और सकारात्मक मानवीय संबंधों से प्राप्त होता है।

9. गाँव के लोगों की आजीविका के मुख्य साधन क्या हैं ?

Solution:

Concept: इस प्रश्न में 'हा' गाँव की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को समझना आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के साधन अक्सर प्रकृति और स्थानीय संसाधनों पर आधारित होते हैं। खेती और पशुपालन ऐसे ही प्रमुख साधन हैं जो लोगों को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

Step 1: पारंपरिक अर्थव्यवस्था

'हा' गाँव की अर्थव्यवस्था मुख्यतः पारंपरिक और प्रकृति-आधारित है। यहाँ के लोग आधुनिक औद्योगिक साधनों पर निर्भर न होकर प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके जीवनयापन करते हैं।

Step 2: कृषि (खेती)

गाँव के लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन पहाड़ी कृषि है। वे पहाड़ी ढलानों पर सीढ़ीनुमा खेत बनाकर अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अनाज, दालें और सब्जियाँ उगाते हैं।

Step 3: पशुपालन

खेती के साथ-साथ पशुपालन भी उनकी आय और जीवनयापन का महत्वपूर्ण साधन है। वे गाय, भैंस और बकरी जैसे पशुओं का पालन करते हैं, जिनसे उन्हें दूध, घी और ऊन जैसी आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।

Step 4: प्रकृति के साथ सामंजस्य

गाँव के लोग प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीते हैं। वे भूमि को माँ के समान मानते हैं और उससे केवल उतना ही लेते हैं जितना उनकी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त हो।

Quick Tip

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और पशुपालन आजीविका के प्रमुख साधन होते हैं, जो लोगों को आत्मनिर्भर बनाते हैं और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

10. शहरी लोगों को 'हा' गाँव के निवासियों से क्या मुख्य सीख लेनी चाहिए ?

Solution:

Concept: इस प्रश्न का उद्देश्य यह समझना है कि ग्रामीण जीवन की सरलता और सामुदायिक भावना आधुनिक शहरी जीवन के लिए क्या प्रेरणा दे सकती है। अक्सर भौतिक सुविधाओं के बावजूद शहरों में लोग तनाव, अकेलेपन और असंतोष का अनुभव करते हैं, जबकि सीमित संसाधनों में भी ग्रामीण समाज संतोष और सहयोग से जीवन जीता है।

Step 1: शहरी जीवन की स्थिति

आज का शहरी जीवन अनेक भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न है, जैसे आधुनिक घर, वाहन और तकनीकी साधन। फिर भी वहाँ अक्सर तनाव, प्रतिस्पर्धा और एकाकीपन की समस्या देखने को मिलती है।

Step 2: सच्ची खुशी का आधार

'हा' गाँव के निवासियों का जीवन यह सिखाता है कि वास्तविक खुशी महँगे साधनों में नहीं बल्कि मानवीय संबंधों, विश्वास और सहयोग की भावना में निहित होती है।

Step 3: संतोष और प्रकृति से सामंजस्य

शहरी लोगों को यह सीख लेनी चाहिए कि जीवन में संतोष की भावना विकसित करना आवश्यक है। साथ ही प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Step 4: सामुदायिक भावना का महत्व

गाँव के लोगों की तरह शहरी समाज में भी सामुदायिक भावना को मजबूत करना चाहिए, जहाँ लोग एक-दूसरे की सहायता करें और मिल-जुलकर समस्याओं का समाधान करें। इससे अकेलेपन और तनाव को कम किया जा सकता है।

Quick Tip

सच्चा सुख केवल भौतिक सुविधाओं से नहीं, बल्कि संतोष, सहयोग और मजबूत मानवीय संबंधों से प्राप्त होता है।

प्रश्न 11: पद्यांश भाव (आधार : 'कन्यादान')

11. "लड़की अभी सयानी नहीं थी... उसे सुख का आभास तो होता था, लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था।" इन पंक्तियों का भावार्थ और काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें।

Solution:

Concept: यह पंक्तियाँ कवि [?] की कविता "[?]" से ली गई हैं। इन पंक्तियों में माँ के मन की चिंता, ममता और करुणा का भाव प्रकट होता है। कवि ने बेटी के भोलेपन और उसकी मानसिक अपरिपक्वता को अत्यंत संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है।

Step 1: भावार्थ

इन पंक्तियों में माँ अपनी बेटी के भोले और नासमझ स्वभाव के बारे में सोच रही है। यद्यपि लड़की विवाह योग्य आयु तक पहुँच गई है, परंतु मानसिक और भावनात्मक रूप से वह अभी पूरी तरह परिपक्व नहीं हुई है।

Step 2: जीवन के सुख-दुख की समझ

लड़की ने अपने मायके के स्नेहपूर्ण वातावरण में केवल जीवन के सुखद पक्ष — जैसे प्रेम, देखभाल और आनंद — का ही अनुभव किया है। इसलिए उसे सुख का आभास तो है, परंतु जीवन में आने वाले दुखों, कठिनाइयों और जिम्मेदारियों को समझने की क्षमता अभी उसमें विकसित नहीं हुई है।

Step 3: माँ की चिंता

माँ को इस बात की चिंता है कि विवाह के बाद बेटी को नए वातावरण, सामाजिक अपेक्षाओं और जीवन की चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, जिनके लिए वह अभी पूरी तरह तैयार नहीं है।

Step 4: काव्य-सौंदर्य

इन पंक्तियों में खड़ी बोली हिंदी का सरल, सहज और भावपूर्ण प्रयोग हुआ है। 'दुख बाँचना' एक अत्यंत प्रभावशाली और लाक्षणिक अभिव्यक्ति है, जिसमें 'बाँचना' का अर्थ है पढ़ना या समझना। इसके माध्यम से कवि ने जीवन के दुखों को एक पाठ की तरह समझने की क्षमता का सुंदर बिंब प्रस्तुत किया है। इन पंक्तियों में करुण रस की प्रधानता है और माँ की ममता तथा व्याकुलता को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है।

Quick Tip

कविता “[?]” में कवि ने माँ की भावनाओं, बेटी के भोलेपन और विवाह के समय की करुण स्थिति को अत्यंत संवेदनशील और प्रभावशाली शैली में व्यक्त किया है।

अनुभाग - II: साहित्य (Short Answers)

12. कवि श्रीधर पाठक के साहित्यिक योगदान और उनके काव्य की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

Solution:

Concept: यह प्रश्न हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि श्रीधर पाठक के साहित्यिक योगदान और उनकी काव्य-विशेषताओं को समझने से संबंधित है। वे आधुनिक हिंदी साहित्य के संक्रमण काल के महत्वपूर्ण कवि थे, जब हिंदी काव्य ब्रजभाषा से खड़ी बोली की ओर अग्रसर हो रहा था।

Step 1: साहित्यिक परिचय

श्रीधर पाठक (1859--1928) आधुनिक हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि थे। वे उस समय के प्रतिनिधि कवि थे जब हिंदी साहित्य में भाषा और शैली के स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे।

Step 2: खड़ी बोली के विकास में योगदान

उन्होंने खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वच्छंदतावादी (Romantic) कवियों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। उन्होंने हिंदी कविता को ब्रजभाषा की परंपरा से आगे बढ़ाकर खड़ी बोली की ओर विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Step 3: प्रकृति-चित्रण

उनके काव्य की सबसे प्रमुख विशेषता प्रकृति का अत्यंत सुंदर और सजीव चित्रण है। वे प्रकृति को केवल पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत और भावनात्मक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना 'कश्मीर सुषमा' में कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन मिलता है।

Step 4: अन्य काव्य-विशेषताएँ

उनकी रचनाओं में स्वदेश-प्रेम, राष्ट्रीय जागरण की भावना, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध और मानवतावाद के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली — दोनों में काव्य-रचना करके हिंदी साहित्य को समृद्ध किया।

Quick Tip

श्रीधर पाठक को हिंदी साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वच्छंदतावादी कवियों में गिना जाता है। उनके काव्य में प्रकृति-चित्रण, स्वदेश-प्रेम और मानवतावादी दृष्टि प्रमुख रूप से दिखाई देती है।

13. तुलसीदास जी के अनुसार, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के स्वभाव की वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो उन्हें वंदनीय बनाती हैं?

Solution:

Concept: गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य [?] में भगवान राम के चरित्र को आदर्श मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके व्यक्तित्व में शील, शक्ति और सौंदर्य का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है, जिसके कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम और वंदनीय माने जाते हैं।

Step 1: वचन-पालन की दृढ़ता

राम की सबसे प्रमुख विशेषता उनका एक बार दिए गए वचन का पालन करना था। वे अपने वचन को निभाने के लिए किसी भी कठिनाई का सामना करने के लिए तैयार रहते थे। इसी कारण उन्हें 'एकवचनी' और 'एकपत्नीव्रत' कहा गया है।

Step 2: विनम्रता और निरहंकारिता

यद्यपि राम अत्यंत शक्तिशाली थे, फिर भी उन्होंने कभी अपनी शक्ति का अहंकार नहीं किया। उनका स्वभाव अत्यंत विनम्र, शांत और मर्यादित था।

Step 3: समभाव और धैर्य

राम का स्वभाव अत्यंत संतुलित था। वे सुख-दुख, मान-अपमान, राजमहल और वन — सभी परिस्थितियों में समान रूप से धैर्य और संतुलन बनाए रखते थे।

Step 4: करुणा और न्यायप्रियता

राम दीन-दुखियों और असहायों के प्रति अत्यंत करुणामय थे। शबरी के जूठे बेर स्वीकार करना उनकी करुणा और समानता की भावना का प्रतीक है। साथ ही वे न्यायप्रिय और धर्मपरायण भी थे।

Step 5: आदर्श चरित्र

उनकी पितृभक्ति, सत्यनिष्ठा, करुणा और समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम उन्हें एक आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम बनाते हैं। यही गुण उन्हें समाज में वंदनीय बनाते हैं।

Quick Tip

तुलसीदास जी के अनुसार भगवान राम आदर्श मानव के प्रतीक हैं, जिनमें शील, शक्ति, करुणा, विनम्रता और मर्यादा का अद्भुत समन्वय मिलता है।

14. मुंशी प्रेमचंद कृत 'बाल-अदालत' (या समतुल्य कहानी) समाज को न्याय के विषय में क्या महत्वपूर्ण संदेश देती है ?

Solution:

Concept: मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं में सामाजिक न्याय, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उनकी कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि न्याय का आधार निष्पक्षता, सत्य और नैतिकता है। 'बाल-अदालत' जैसी रचनाएँ समाज को न्याय की सही भावना का संदेश देती हैं।

Step 1: न्याय का मूल सिद्धांत

इस रचना में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि जब कोई व्यक्ति न्याय की जिम्मेदारी ग्रहण करता है, तब उसे व्यक्तिगत संबंधों से ऊपर उठकर केवल सत्य और न्याय के आधार पर निर्णय लेना चाहिए। यह वही सिद्धांत है जिसे प्रेमचंद ने अपनी प्रसिद्ध कहानी [?] में भी व्यक्त किया है।

Step 2: न्याय की जन्मजात भावना

कहानी यह दर्शाती है कि न्याय की भावना मनुष्य के भीतर स्वाभाविक रूप से विद्यमान होती है। यहाँ तक कि बच्चों के मन में भी सही और गलत को पहचानने की सहज क्षमता होती है।

Step 3: निष्पक्षता का महत्व

रचना यह संदेश देती है कि न्याय-व्यवस्था को पक्षपात, भ्रष्टाचार और बाहरी दबाव से मुक्त रखना आवश्यक है। न्याय तभी सार्थक होता है जब वह पूर्णतः निष्पक्ष और सत्य पर आधारित हो।

Step 4: नैतिक शिक्षा का महत्व

यदि बच्चों को बचपन से ही नैतिक मूल्यों, जिम्मेदारी और निष्पक्षता का पाठ सिखाया जाए, तो वे बड़े होकर एक न्यायप्रिय और जागरूक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

Quick Tip

प्रेमचंद की कहानियाँ समाज को यह सिखाती हैं कि सच्चा न्याय तभी संभव है जब निर्णय लेने वाला व्यक्ति निष्पक्ष, सत्यनिष्ठ और नैतिक मूल्यों से प्रेरित हो।

15. 'ईदगाह' कहानी में हामिद के चरित्र की वह कौन सी विशेषता है जो पाठकों को सर्वाधिक प्रभावित करती है ?

Solution:

Concept: मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' में हामिद का चरित्र बाल-सुलभ सरलता, संवेदनशीलता और त्याग की भावना का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। यद्यपि वह बहुत छोटा बालक है, फिर भी उसके विचार अत्यंत परिपक्व और संवेदनशील हैं।

Step 1: हामिद का सरल और संवेदनशील स्वभाव

हामिद उम्र में केवल चार-पाँच वर्ष का बालक है, फिर भी उसकी सोच अत्यंत समझदारी भरी है। वह अपनी दादी अमीना से गहरा प्रेम करता है और उनकी तकलीफों को महसूस करता है।

Step 2: निःस्वार्थ प्रेम और त्याग

ईद के मेले में जब अन्य बच्चे अपने पैसों से खिलौने, मिठाइयाँ और चाट खरीदते हैं, तब हामिद अपने तीन पैसों को सोच-समझकर खर्च करता है। वह अपनी खुशी से अधिक अपनी दादी की परेशानी के बारे में सोचता है।

Step 3: चिमटा खरीदने का निर्णय

हामिद को याद आता है कि उसकी दादी अमीना रोटी बनाते समय तवे से रोटी उतारते हुए अक्सर अपनी उँगलियाँ जला लेती हैं। इसलिए वह खिलौनों के बजाय तीन पैसों में एक चिमटा खरीद लेता है, जिससे उनकी उँगलियाँ न जलें।

Step 4: चरित्र की प्रभावशीलता

यह घटना हामिद की विवेकशीलता, परिपक्वता और गहरी संवेदनशीलता को दर्शाती है। जब दादी अमीना को यह पता चलता है, तो वे भावुक हो उठती हैं। हामिद का यह त्याग और प्रेम पाठकों के हृदय को गहराई से प्रभावित करता है।

Quick Tip

'ईदगाह' कहानी में हामिद का चरित्र यह सिखाता है कि सच्चा प्रेम और त्याग उम्र का मोहताज नहीं होता। छोटी-सी उम्र में भी गहरी संवेदनशीलता और समझ हो सकती है।

अनुभाग - III: दीर्घ उत्तर (Long Answers)

16. "वसंत ऋतु प्रकृति का यौवन है।" इस कथन की सार्थकता सिद्ध करते हुए वसंत ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य का विस्तृत वर्णन करें।

Solution:

Concept: वसंत ऋतु को 'ऋतुराज' कहा जाता है क्योंकि यह प्रकृति में नवजीवन, उत्साह और सौंदर्य का संचार करती है। जैसे मनुष्य के जीवन में यौवन ऊर्जा, आकर्षण और नई संभावनाएँ लेकर आता है, उसी प्रकार वसंत ऋतु भी प्रकृति को नई चेतना और जीवन से भर देती है। इसलिए इसे प्रकृति का यौवन कहा जाता है।

Step 1: वसंत ऋतु का महत्व

वसंत ऋतु शीतकाल की ठिठुरन और नीरसता को समाप्त कर प्रकृति में नई ऊर्जा और उल्लास भर देती है। इस ऋतु में वातावरण अत्यंत सुहावना और संतुलित हो जाता है — न अधिक ठंड और न अधिक गर्मी।

Step 2: प्राकृतिक परिवर्तन

पतझड़ के बाद पेड़ों पर नई कोमल कोंपलें फूटने लगती हैं और वृक्ष पुनः हरे-भरे दिखाई देने लगते हैं। आम के वृक्षों पर मंजरी (बौर) आ जाती है, जिसकी मधुर सुगंध से वातावरण सुगंधित हो उठता है।

Step 3: रंगों और फूलों का सौंदर्य

वसंत ऋतु में प्रकृति मानो रंगों से भर उठती है। खेतों में सरसों के पीले फूल ऐसे दिखाई देते हैं मानो धरती ने पीली चादर ओढ़ ली हो। वनों में पलाश के लाल फूल दहकते हुए प्रतीत होते हैं। गुलाब, चम्पा, टेसू और अनेक रंग-बिरंगे फूल वातावरण को अत्यंत सुंदर बना देते हैं।

Step 4: जीव-जंतुओं में उल्लास

इस ऋतु में पक्षियों और जीव-जंतुओं में भी विशेष उत्साह दिखाई देता है। कोयल की मधुर कूक, भौरों का गुंजन और तितलियों का फूलों के आसपास मंडराना प्रकृति के सौंदर्य को और भी जीवंत बना देता है।

Step 5: निष्कर्ष

इस प्रकार वसंत ऋतु प्रकृति को नई ऊर्जा, सौंदर्य और जीवन से भर देती है। जैसे यौवन मनुष्य के जीवन में शक्ति और उमंग लाता है, उसी प्रकार वसंत ऋतु भी प्रकृति को नई चेतना प्रदान करती है। इसलिए "वसंत ऋतु प्रकृति का यौवन है" यह कथन पूर्णतः सार्थक प्रतीत होता है।

Quick Tip

वसंत ऋतु को 'ऋतुराज' कहा जाता है क्योंकि इस ऋतु में प्रकृति अपने सबसे सुंदर और जीवंत रूप में दिखाई देती है।

17. "खेल-कूद केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन-कौशल सीखने का माध्यम हैं।" आधुनिक जीवनशैली के संदर्भ में खेलने के अवसरों की आवश्यकता पर अपने विचार स्पष्ट करें।

Solution:

Concept: आधुनिक युग में बच्चों का जीवन धीरे-धीरे डिजिटल उपकरणों — जैसे मोबाइल, टैबलेट और वीडियो गेम्स — तक सीमित होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में खेल-कूद केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है। खेल बच्चों को जीवन के अनेक महत्वपूर्ण कौशल सिखाते हैं।

Step 1: शारीरिक और मानसिक विकास

नियमित खेलकूद से शरीर स्वस्थ, मजबूत और सक्रिय बना रहता है। दौड़ना, कूदना और विभिन्न खेलों में भाग लेना शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। साथ ही खेल मानसिक तनाव को कम करने में भी सहायक होते हैं और मन को प्रसन्न रखते हैं।

Step 2: सामाजिक कौशल का विकास

समूह में खेले जाने वाले खेल बच्चों को सहयोग, नेतृत्व, अनुशासन और नियमों का पालन करना सिखाते हैं। वे दूसरों के साथ तालमेल बिठाना और टीम के रूप में कार्य करना सीखते हैं, जो जीवन के महत्वपूर्ण सामाजिक कौशल हैं।

Step 3: संघर्ष और खेल-भावना

खेलों के माध्यम से बच्चे जीत और हार दोनों को स्वीकार करना सीखते हैं। वे समझते हैं कि हार से निराश होने के बजाय उससे सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए। यह मानसिक दृढ़ता जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सहायक होती है।

Step 4: आधुनिक जीवन में खेलों की आवश्यकता

आज के समय में जब बच्चे अधिकतर समय स्क्रीन के सामने बिताते हैं, तब उनके लिए मैदान में खेलने के अवसर अत्यंत आवश्यक हो जाते हैं। खेल उन्हें सक्रिय, स्वस्थ और सामाजिक रूप से जागरूक बनाते हैं।

Step 5: निष्कर्ष

इस प्रकार खेल-कूद बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। माता-पिता, विद्यालय और समाज को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों को खेलने के पर्याप्त अवसर मिलें, क्योंकि खेल जीवन के महत्वपूर्ण कौशल सिखाने का सर्वोत्तम माध्यम है।

Quick Tip

खेल-कूद बच्चों को केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ ही नहीं बनाते, बल्कि उनमें अनुशासन, सहयोग, आत्मविश्वास और संघर्ष से सीखने की क्षमता भी विकसित करते हैं।

18. वेंकटराव ने समाज सुधार और जन-जागरूकता के लिए किस प्रकार के प्रयास किए और उनकी सफलता के क्या कारण थे ?

Solution:

Concept: वेंकटराव एक ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वास और अशिक्षा को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास किए। उनका उद्देश्य समाज में जागरूकता फैलाकर लोगों को शिक्षा, समानता और प्रगतिशील विचारों की ओर प्रेरित करना था।

Step 1: सुधार के लिए प्रयास

वेंकटराव ने समाज में व्याप्त रूढ़िवाद और अंधविश्वास को समाप्त करने के लिए अनेक प्रयास किए। उन्होंने लोगों को जागरूक करने और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाने का कार्य किया।

Step 2: संचार माध्यमों का उपयोग

उन्होंने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए पत्रों, लेखों और पत्र-पत्रिकाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग किया। लेखनी को माध्यम बनाकर उन्होंने समाज में विचार-परिवर्तन लाने का प्रयास किया और जनसंचार के माध्यम से लोगों तक अपने संदेश पहुँचाए।

Step 3: शिक्षा और सामाजिक सुधार

वेंकटराव ने महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने, बाल-विवाह का विरोध करने और जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए निरंतर प्रयास किए। उनके लेखों और विचारों ने समाज में नई चेतना उत्पन्न की।

Step 4: सफलता के कारण

उनकी सफलता का मुख्य कारण उनकी अटूट लगन, ईमानदारी और विचारों की स्पष्टता थी। वे जनता की भाषा और मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझते थे और अपने जीवन में भी उन्हीं आदर्शों का पालन करते थे जिनका वे प्रचार करते थे।

Step 5: प्रभाव

उनके प्रयासों से समाज में जागरूकता फैली और लोगों के विचारों में परिवर्तन आने लगा। इस प्रकार वेंकटराव के कार्यों ने सामाजिक सुधार और जन-जागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Quick Tip

सच्चा समाज सुधारक वही होता है जो केवल उपदेश न दे, बल्कि अपने जीवन में भी उन्हीं मूल्यों का पालन करे जिनका वह प्रचार करता है।

अनुभाग - IV: सृजनात्मक लेखन (Creative Writing)

19. आपके क्षेत्र में कई दिनों से पेयजल की भारी किल्लत है। इस समस्या के समाधान हेतु अपने नगर निगम अधिकारी को एक शिकायती/प्रार्थना पत्र लिखिए। अथवा, 'पर्यावरण संरक्षण : प्लास्टिक को ना कहें' विषय पर एक आकर्षक विज्ञापन तैयार करें।

Solution:

Concept: पत्र-लेखन औपचारिक संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके माध्यम से नागरिक अपनी समस्याओं को संबंधित अधिकारियों तक प्रभावी ढंग से पहुँचा सकते हैं। एक अच्छे प्रार्थना-पत्र में स्पष्ट विषय, विनम्र भाषा और समस्या का संक्षिप्त किंतु प्रभावी विवरण होना चाहिए।

Step 1: प्रेषक और प्राप्तकर्ता का विवरण

पत्र के प्रारम्भ में प्रेषक का नाम, पता और दिनांक लिखा जाता है। इसके बाद संबंधित अधिकारी का पदनाम और कार्यालय का पता लिखा जाता है।

Step 2: विषय और समस्या का उल्लेख

पत्र में संक्षिप्त रूप में विषय लिखकर समस्या का स्पष्ट वर्णन किया जाता है, जिससे अधिकारी तुरंत समस्या की प्रकृति समझ सके।

Step 3: समाधान हेतु निवेदन

समस्या बताने के बाद अधिकारी से विनम्र भाषा में उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया जाता है।

Step 4: औपचारिक समापन

पत्र के अंत में धन्यवाद के साथ प्रेषक का नाम, हस्ताक्षर और पहचान लिखी जाती है।

प्रेषक,

[आपका नाम / A.B.C.],

मकान नंबर 45, गांधी नगर,

हैदराबाद, तेलंगाना।

दिनांक: 15 मार्च, 2026

प्रति,

जलकल अधिकारी (नगर निगम),

गांधी नगर ज़ोन, हैदराबाद।

विषय : क्षेत्र में पेयजल की भारी किल्लत के संबंध में शिकायती/प्रार्थना पत्र।

महोदय,

मैं गांधी नगर क्षेत्र का निवासी हूँ और इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान हमारे इलाके में पिछले दो सप्ताह से उत्पन्न पेयजल की गंभीर समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

पिछले 15 दिनों से हमारे क्षेत्र में पानी की आपूर्ति अत्यंत अनियमित हो गई है। कभी पानी आता ही नहीं है और यदि आता भी है तो केवल 10--15 मिनट के लिए, जिसका दबाव इतना कम होता है कि टंकियाँ नहीं भर पातीं। इस भीषण गर्मी में पानी की इस किल्लत के कारण क्षेत्रवासियों का दैनिक जीवन अत्यंत कठिन हो गया है। महिलाओं और बच्चों को दूर स्थित हैंडपंपों से पानी लाना पड़ रहा है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए शीघ्र ही आवश्यक कदम उठाकर हमारे क्षेत्र में नियमित पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने की कृपा करें, जिससे क्षेत्रवासियों को इस परेशानी से राहत मिल सके।

सधन्यवाद,

भवदीय,

हस्ताक्षर: [A.B.C.]

(समस्त गांधी नगर निवासी)

Quick Tip

औपचारिक पत्र लिखते समय भाषा विनम्र, स्पष्ट और संक्षिप्त होनी चाहिए। विषय और समस्या को सीधे और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना प्रभावी पत्र-लेखन की मुख्य विशेषता है।